हिन्दुस्तान – 20/06/19

अमेरिकी जासूसी उपग्रहों की तस्वीरों से वैज्ञानिकों ने नतीजा निकाला, ग्लेशियरों के पिघलने से प्रतिवर्ष आठ अरब टन जल हानि

हिमालय में ग्लेशियरों के पिघलने की रफ्तार दोगुनी हुई

नई दिल्ली | मदन जैड़ा

बढ़ते तापमान के कारण हिमालय के साढ़े छह सौ ग्लेशियरों पर बड़ा खतरा मंडरा रहा है। एक नए अध्ययन में दावा किया गया है कि ग्लेशियरों के पिघलने की रफ्तार दोगुनी हो चुकी है। साइंस एडवांसेज जर्नल में प्रकाशित शोध के मुताबिक 1975 से 2000 के बीच ये ग्लेशियर प्रतिवर्ष 10 इंच घट रहे थे लेकिन 2000-2016 के दौरान पिघलने की रफ्तार बढ़कर प्रतिवर्ष 20 इंच हो गई है। इससे करीब आठ अरब टन पानी की क्षति हो रही है।

कोलंबिया विश्वविद्यालय के अर्थ इंस्टीट्यूट के शोधकर्ताओं ने उपग्रह से लिए गए 40 सालों के चित्रों को आधार बनाकर यह शोध किया है। ये चित्र अमेरिकी जासूसी उपग्रहों द्वारा लिए गए थे। जिन्हें कुछ समय पूर्व अमेरिकी सरकार ने गैर वर्गीकृत किया। इन चित्रों को श्री डी माड्यूल में बदल कर अध्ययन किया गया। तस्वीरें भारत, चीन, नेपाल और भूटान में स्थित 650 ग्लेशियरों की हैं। जो पश्चिम से पूर्व तक करीब दो हजार किलोमीटर क्षेत्र में फैले हैं।

वैज्ञानिकों का कहना है कि जलवायु परिवर्तन ग्लेशियरों को खा रहा है।

हिमालय क्षेत्र में तापमान 1 डिग्री बढ़ा : इस शोध के मुताबिक 1975-2000 और 2000-2016 के बीच हिमालय क्षेत्र के तापमान में करीब एक डिग्री की बढ़ोत्तरी हुई जिससे ग्लेशियरों के पिघलने की दर 10 इंच से बढ़कर 20 इंच प्रतिवर्ष हो गई। हालांकि सभी ग्लेशियरों के पिघलने की रफ्तार एक समान नहीं है।

ग्लेशियर पिघलने से खतरे

मैदानी इलाके में बाढ़ : ग्लेशियरों के पिघलने से ऊंची पहाड़ियों में कृत्रिम झीलों का निर्माण होता है। इनके टूटने से बाढ़ का खतरा पैदा हो रहा है। जिससे ढलान में बसी आबादी के लिए खतरा उत्पन्न होता है।

80 करोड़ आबादी पर असर : ग्लेशियरों से निकलने वाली नदियों में जल स्रोतों पर भारत, चीन, नेपाल, भूटान की 80 करोड़ आबादी निर्भर है। ग्लेशियरों से निकली नदियों से सिंचाई, पेयजल और जल विद्युत उत्पादन किया जाता है। यदि एक दिन सारे ग्लेशियर पिघले गए तो ये संसाधन खत्म हो जाएंगे। इसका दूरगामी खतरा चारों देशों के 80 करोड़ लोगों पर पड़ेगा।

60 करोड़ टन बर्फ

हिमालय के 650 ग्लेशियरों में करीब 60 करोड़ टन बर्फ जमी हुई है। उत्तरी एवं दक्षिणी ध्रुव के बाद यह तीसरा बड़ा क्षेत्र है जहां इतनी बर्फ है। इसलिए हिमालयी ग्लेशियर क्षेत्र को तीसरा ध्रुव भी कहते हैं। उत्तरी एवं दक्षिणी ध्रुव में भी बर्फ पिघल रही है जिसके असर से समुद्र का जलस्तर बढ़ रहा है।

हिन्दुस्तान – 20/06/19

हिन्दुस्तान – 20/06/19

गाँव-कस्बों से | हिन्दुस्तान - 20/06/19

रुड़की के एनआईएच में बुधवार को आयोजित शिविर में शामिल लोग। ● हिन्दुस्तान

जल संसाधन क्षेत्र में शोध की जानकारी दी

रुड़की। राष्ट्रीय जल विज्ञान संस्थान में जल संसाधन के क्षेत्र में शोध एवं विकास कार्यों को लेकर कार्यशाला का आयोजन किया गया। 21 जून तक चलने वाली कार्यशाला में विभिन्न राज्यों के इंजीनियरों, रिसर्च स्कॉलर, वैज्ञानिक और एसोसिएट प्रोफेसर भाग ले रहे हैं। कार्यशाला समन्वयक डॉ. एलएन ठकुराल ने विभिन्न जानकारी दी। कार्यक्रम में डॉ. राकेश कुमार, डॉ. प्रकाश चौहान, डॉ. एके सर्राफ, डीएस राठौर, डॉ. विशाल सिंह, डॉ. संजय जैन, डॉ. एके लोहानी, डॉ. अजंता गोस्वामी, आशीष भंडारी, डॉ. आरडी गर्ग, सुमन, रोहताश सैनी आदि मौजूद रहे।